Bio Vet Innovator Magazine
Volume 2 (Issue 12) DECEMBER 2025
OPEN ACCESS POPULAR ARTICLE

नवजात पशुओं के लिए कोलोस्ट्रम (खीस): स्वस्थ जीवन की पहली सुरक्षा परत

डॉ. कृतिका वर्मा
सहायक प्राध्यापक, श्रीगंगानगर पशु चिकित्सा महाविद्यालय,
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान), भारत
***Corresponding Author:** kritikaverma366@gmail.com*
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18290708

Received: December 22, 2025
Published: December 31, 2025
© All rights are reserved by **डॉ. कृतिका वर्मा**

प्रस्तावना:

नवजात पशु के जन्म के तुरंत बाद मिलने वाला पहला दूध, जिसे *कोलोस्ट्रम* या *खीस/पहला दूध* कहा जाता है, उसके संपूर्ण स्वास्थ्य, विकास और जीवित रहने के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। यह गाढ़ा, पीले रंग का दूध सामान्य दूध से भिन्न होता है और इसमें प्रतिरक्षा तत्व, ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज तथा विटामिन बहुत अधिक मात्रा में होते हैं। इसी कारण कोलोस्ट्रम को नवजात के लिए प्राकृतिक टीके की तरह माना जाता है।

कोलोस्ट्रम क्या है?

कोलोस्ट्रम वह पहला दूध है जो पशु के प्रसव के तुरंत बाद लगभग 2 से 3 दिनों तक निकलता है। यह सामान्य दूध से अलग होता है-यह अधिक गाढ़ा, हल्के पीले रंग का और अत्यधिक पौष्टिक होता है। इसमें प्रोटीन, वसा, खनिज तथा विटामिनों की मात्रा सामान्य दूध की अपेक्षा कहीं अधिक होती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कोलोस्ट्रम में इम्युनोग्लोब्युलिन (IgG, IgM, IgA) जैसे प्रतिरक्षी तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो नवजात पशु को जन्म के तुरंत बाद होने वाले संक्रमणों से बचाते हैं। नवजात पशु जन्म के समय लगभग बिना प्रतिरक्षा के होता है, क्योंकि उसकी अपनी रोग-प्रतिरोधक प्रणाली पूरी तरह विकसित नहीं होती। ऐसे में कोलोस्ट्रम उसके लिए प्राकृतिक टीके का कार्य करता है और उसे डायरिया, निमोनिया तथा अन्य संक्रामक रोगों से सुरक्षा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, कोलोस्ट्रम आंतों की कार्यक्षमता को बेहतर बनाता है, पाचन तंत्र को सक्रिय करता है और शरीर को तुरंत ऊर्जा प्रदान करता है। इसलिए कोलोस्ट्रम केवल पहला दूध नहीं, बल्कि नवजात के जीवन की शुरुआत में मिलने वाली सबसे महत्वपूर्ण पोषण एवं सुरक्षा ढाल है।

कोलोस्ट्रम कब और कितना देना चाहिए?

सर्वोत्तम परिणाम के लिए नवजात को जन्म के पहले 1–2 घंटे के भीतर कोलोस्ट्रम अवश्य पिलाना चाहिए, और पहले 24 घंटे के अंदर शरीर के भार के लगभग 10% के बराबर मात्रा दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि बछड़े का वजन 30 किलोग्राम है तो उसे पहले दिन करीब 3 लीटर कोलोस्ट्रम मिलना चाहिए। पहले 24 घंटे बाद आंतों की एंटीबॉडी अवशोषित करने की क्षमता कम हो जाती है, इसलिए देरी करना नुकसानदायक हो सकता है।

कोलोस्ट्रम के मुख्य लाभ

1. रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है

नवजात पशु का अपना प्रतिरक्षा तंत्र जन्म के समय पूर्ण रूप से विकसित नहीं होता। कोलोस्ट्रम में उपस्थित इम्युनोग्लोब्युलिन्स (IgG, IgM, IgA) उसे तुरंत रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करते हैं। इससे डायरिया, निमोनिया और अन्य संक्रामक रोगों का खतरा काफी कम हो जाता है।

2. ऊर्जा और पोषण का समृद्ध स्रोत

कोलोस्ट्रम में सामान्य दूध की तुलना में अधिक: प्रोटीन, वसा, विटामिन A, D, E, खनिज होते हैं, जो नवजात को तत्काल ऊर्जा प्रदान करते हैं और ठंड या तनावपूर्ण परिस्थितियों से बचाते हैं।

3. पाचन तंत्र के विकास में सहायक

कोलोस्ट्रम आंतों की कोशिकाओं के विकास को बढ़ावा देता है, जिससे पाचन तंत्र मजबूत बनता है और पशु भविष्य में भोजन को बेहतर ढंग से पचा पाता है।

4. शरीर का तापमान बनाए रखने में मददगार

नवजात विशेषकर ठंड में जल्दी ठंडक का शिकार हो जाते हैं। कोलोस्ट्रम की अधिक ऊर्जा सामग्री उन्हें शरीर का तापमान स्थिर रखने में मदद करती है।

5. वृद्धि और विकास में सहायक

कोलोस्ट्रम में ग्रोथ फैक्टर्स होते हैं जो मांसपेशियों, हड्डियों और अंगों के विकास को प्रोत्साहित करते हैं। जिन पशुओं को समय पर पर्याप्त कोलोस्ट्रम मिलता है, वे आगे चलकर अधिक स्वस्थ, मजबूत और उत्पादनशील होते हैं।

कोलोस्ट्रम न मिलने के दुष्परिणाम

नवजात पशु के लिए कोलोस्ट्रम जीवन रक्षक आहार होता है। यदि उसे जन्म के तुरंत बाद समय पर और पर्याप्त मात्रा में कोलोस्ट्रम नहीं मिलता, तो उसके शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता विकसित नहीं हो पाती। परिणामस्वरूप बछड़ा डायरिया, निमोनिया, नाभि संक्रमण तथा अन्य संक्रामक रोगों का आसानी से शिकार हो जाता है। ऐसे नवजात बार-बार बीमार पड़ते हैं, कमजोर रहते हैं और उनका उपचार खर्च भी बढ़ जाता है।

कोलोस्ट्रम के अभाव में नवजात की मृत्यु दर भी काफी अधिक हो जाती है, विशेषकर पहले एक महीने के भीतर। प्रतिरक्षा के बिना शरीर संक्रमणों से नहीं लड़ पाता, जिससे कई बार हल्की बीमारी भी जानलेवा सिद्ध हो सकती है। इसके अतिरिक्त, आवश्यक पोषक तत्व और ऊर्जा न मिलने के कारण शरीर की सामान्य वृद्धि रुक जाती है। ऐसे बछड़े वजन में पीछे रह जाते हैं, उनकी हड्डियाँ और मांसपेशियाँ ठीक से विकसित नहीं हो पातीं और वे अपने समवयस्कों की तुलना में कमजोर बने रहते हैं।

लंबे समय में इसका प्रभाव पशु की भविष्य की उत्पादन क्षमता पर भी पड़ता है। जिन पशुओं को शुरुआत में पर्याप्त कोलोस्ट्रम नहीं मिलता, वे बड़े होकर कम दूध देने वाले, कमज़ोर और अधिक रोगग्रस्त बनते हैं। इस प्रकार कोलोस्ट्रम की कमी न केवल नवजात के जीवन को खतरे में डालती है, बल्कि किसान को भविष्य में आर्थिक नुकसान भी पहुँचाती है।

स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें

कोलोस्ट्रम पिलाते समय: थन अच्छी तरह साफ करें, बर्तन स्वच्छ रखें, यदि मां दूध नहीं पिला पा रही तो साफ बोतल/फीडर का प्रयोग करें। संक्रमित दूध नवजात में गंभीर बीमारी फैला सकता है, इसलिए स्वच्छता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यदि मां का कोलोस्ट्रम उपलब्ध न हो तो क्या करें?

- किसी स्वस्थ पशु का कोलोस्ट्रम दिया जा सकता है
- पहले से जमा कर फ्रीज़र में रखे कोलोस्ट्रम को गुनगुना करके पिलाया जा सकता है (उबालें नहीं, इससे एंटीबॉडी नष्ट हो जाती हैं)

किसानों के लिए उपयोगी सलाह

- जन्म के तुरंत बाद नाल कटाई और सफाई के साथ कोलोस्ट्रम अवश्य पिलाएँ
- कम से कम पहले 3 दिन तक कोलोस्ट्रम दें

- कमजोर या समय पूर्व जन्मे बछड़ों पर विशेष ध्यान दें
- सही मात्रा और समय का पालन करें

निष्कर्ष:

कोलोस्ट्रम केवल पहला दूध नहीं, बल्कि नवजात पशु के जीवन की पहली सुरक्षा ढाल, पहला टीका और स्वस्थ भविष्य की मजबूत नींव है। जन्म के तुरंत बाद सही समय, उचित मात्रा और पूर्ण स्वच्छता के साथ कोलोस्ट्रम पिलाने से नवजात को रोगों से सुरक्षा, पर्याप्त ऊर्जा, बेहतर वृद्धि और दीर्घकालीन उत्पादन क्षमता प्राप्त होती है।

इसके विपरीत, कोलोस्ट्रम की कमी नवजात के जीवन को खतरे में डालने के साथ-साथ किसान को भविष्य में आर्थिक नुकसान भी पहुँचाती है। अतः प्रत्येक पशुपालक का यह कर्तव्य है कि वह जन्म के तुरंत बाद अपने पशुओं को अनिवार्य रूप से कोलोस्ट्रम पिलाए और इस सरल, सस्ती तथा प्रभावी विधि से अपने पशुधन को स्वस्थ, मजबूत और अधिक उत्पादनशील बनाए।

Citation: डॉ. कृतिका वर्मा. (2025). नवजात पशुओं के लिए कोलोस्ट्रम (खीस): स्वस्थ जीवन की पहली सुरक्षा परत. **Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 2, Number 12, pp. 26-28). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.18290708**